فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ بِٱلْجُنُودِ قَالَ إِنَّ ٱللَّهَ مُبْتَلِيكُم بِنَهَرٍ
فَمَن شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي وَمَن لَّمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُۥ مِنِّيٓ إِلَّا
مَنِ ٱغْتَرَفَ غُرْفَةًۢ بِيَدِهِۦ فَشَرِبُوا۟ مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ فَلَمَّا
جَاوَزَهُۥ هُوَ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مَعَهُۥ قَالُوا۟ لَا طَاقَةَ لَنَا ٱلْيَوْمَ
بِجَالُوتَ وَجُنُودِهِۦ قَالَ ٱلَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُم مُّلَٰقُوا۟ ٱللَّهِ كَم
مِّن فِئَةٍ قَلِيلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيرَةًۢ بِإِذْنِ ٱللَّهِ ۗ وَٱللَّهُ مَعَ
ٱلصَّٰبِرِينَ ﴿٢٤٩﴾ وَلَمَّا بَرَزُوا۟ لِجَالُوتَ وَجُنُودِهِۦ قَالُوا۟ رَبَّنَآ أَفْرِغْ
عَلَيْنَا صَبْرًا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَٱنصُرْنَا عَلَى ٱلْقَوْمِ
ٱلْكَٰفِرِينَ ﴿٢٥٠﴾ فَهَزَمُوهُم بِإِذْنِ ٱللَّهِ وَقَتَلَ دَاوُۥدُ جَالُوتَ
وَءَاتَىٰهُ ٱللَّهُ ٱلْمُلْكَ وَٱلْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهُۥ مِمَّا يَشَآءُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ
ٱللَّهِ ٱلنَّاسَ بَعْضَهُم بِبَعْضٍ لَّفَسَدَتِ ٱلْأَرْضُ وَلَٰكِنَّ ٱللَّهَ
ذُو فَضْلٍ عَلَى ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٢٥١﴾ تِلْكَ ءَايَٰتُ ٱللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ
بِٱلْحَقِّ ۚ وَإِنَّكَ لَمِنَ ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿٢٥٢﴾ * تِلْكَ ٱلرُّسُلُ فَضَّلْنَا
بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۘ مِّنْهُم مَّن كَلَّمَ ٱللَّهُ ۖ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ
دَرَجَٰتٍ ۚ وَءَاتَيْنَا عِيسَى ٱبْنَ مَرْيَمَ ٱلْبَيِّنَٰتِ وَأَيَّدْنَٰهُ بِرُوحِ
ٱلْقُدُسِ ۗ وَلَوْ شَآءَ ٱللَّهُ مَا ٱقْتَتَلَ ٱلَّذِينَ مِنۢ بَعْدِهِم مِّنۢ بَعْدِ
مَا جَآءَتْهُمُ ٱلْبَيِّنَٰتُ وَلَٰكِنِ ٱخْتَلَفُوا۟ فَمِنْهُم مَّنْ ءَامَنَ
وَمِنْهُم مَّن كَفَرَ ۚ وَلَوْ شَآءَ ٱللَّهُ مَا ٱقْتَتَلُوا۟ وَلَٰكِنَّ ٱللَّهَ
يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ﴿٢٥٣﴾

Theme	
Majority of Israelites' failed in the test of their belief. Victory is not dependent on numbers. Believer's prayer for a victory. Allah reaffirmed the Prophethood of Muhammad (pbuh). Ranks of Rasools.	अक्सरियत बनी इस्राईल अपने ईमान की आज़माइश में नाकाम हो गए। फ़तह और कामयाबी तादाद पर मौक़ूफ़ नहीं होती। फ़तह के लिए मोमिन की दुआ। अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद ﷺ की नुबुव्वत की दोबारा तौसीक़ फ़रमाई। रसूलों के दरजात और मरातिब।
Tarjumani	
When Talut marched forth with his army, he said: "Allah will test you at a certain river, anyone who will drink from its water, shall cease to be my soldier, and those who will not drink to quench their thirst with its water except a sip or so from the hollow of their hands, shall fight on my side." They all drank from it, inspite of this warning, except a few of them. When he and those who believed with him crossed the river, they said: "We have no power left this day against Jalut (Goliath) and his warriors." But the believers, who knew they would meet Allah, replied: "It	फिर जब तालूत लश्कर लेकर चला, तो उसने कहा, "एक दरिया पर अल्लाह की तरफ़ से तुम्हारी आज़माइश होनेवाली है| जो उसका पानी पिएगा, वह मेरे साथी नहीं| मेरा साथी सिर्फ़ वह है जो उससे प्यार न बुझाए| हाँ, एक-आध चुल्लू कोई पी ले, तो पी ले|" मगर एक गरोह-कलील के सिवा वे सब उस दरिया से सैराब हुए| फिर जब तालूत और उसके साथी मुसलमान दरिया पार करके आगे बढ़े, तो उन्होंने तालूत से कह दिया कि आज हममें जालूत और उसके लश्करों का मुक़ाबला करने की ताकत नहीं है| लेकिन जो लोग यह समझते थे कि उन्हें एक दिन अल्लाह से मिलाना है, उन्होंने कहा,

has often happened that a small group, by the grace of Allah, has vanquished a mighty army. Allah is with those who endure with patience." When they advanced to face Jalut (Goliath) and his warriors, they prayed: "Our Rabb! Fill our hearts with steadfastness, make our steps firm, and help us (give us victory) against the unbelievers, they put the unbelievers to flight by the leave of Allah, and Daud (David) killed Jalut. Allah gave Daud the kingdom and wisdom, and taught him what else He pleased. If Allah had not been repelling one set of people by the might of others, there would indeed be disorder on earth, but Allah is Gracious to all the worlds. These are the revelations of Allah; We recite them to you in truth. Surely, you O Muhammad, are one of Our Rasools. These are the Rasools (which We have sent for the guidance of mankind). We have exalted some above others. To some Allah spoke	"बारहा ऐसा हुआ हैं कि एक कलील गरोह अल्लाह ने इज़्न से एक बड़े गरोह पर ग़ालिब आ गया है| अल्लाह सब्र करनेवालों का साथी है|" और जब वे जातूल और उसके लश्करों के मुकाबले पर निकले, तो उन्होंने दुआ की, "ऐ हमारे रब, हम पर सब्र का फैज़ान कर, हमारे क़दम जमा दे और इस काफ़िर गरोह पर हमें फतह नसीब कर|" आख़िरकार अल्लाह के इज़्न से उन्होंने काफिरों को मार भगाया और दाऊद ने जातूल को कत्ल कर दिया और अल्लाह ने उसे सल्तनत और हिकमत से नवाज़ा और जिन-जिन चीजों का चाहा, उनको इल्म दिया __ अगर इस तरह अल्लाह इनसानों के एक गरोह को दुसरे गारोह के ज़रीए से हटाता न रहता तो ज़मीन का निज़ाम बिगड़ जाता | लेकिन दुनिया के लोगों पर अल्लाह का बड़ा फज्ल है (कि वह इस तरह दफाए-फ़साद का इन्तिज़ाम करता रहता है) | ये अल्लाह की आयात हैं, जो हम ठीक-ठीक तुमको सुना रहे हैं| और ऐ मुहम्मद, तुम यकीनन उन लोगों में से हो जो रसूल बनाकर भेजे गए हैं| ये रसुल (जो हमारी तरफ़ से इनसानों की हिदायत पर मामूर हुए) हमने इनको एक-दूसरे से बढ़-

directly, others He raised high in ranks; to Isa (Jesus), the son of Maryam (Mary), We gave clear Signs and supported him with the Holy Spirit. If Allah had so willed, succeeding generations would not have fought against each other after they had received clear signs; but they disputed, as a result, there were some who believed, while others rejected. Yet, If Allah wanted, they would not have fought each other; but Allah does, what He intends.	चढ़कर मर्तबे अता किए	इनमें कोई ऐसा था जिससे ख़ुदा ख़ुदा हम-कमाल हुआ| किसी को उसने दुसरी हैसियतों से बलन्द दर्जे दिए, और आख़िर में ईसा इब्न-मरयम को रौशन निशानियाँ अता कीं और रूहे-पाक से उसकी मदद की	अगर अल्लाह चाहता तो मुमकिन न था कि इन रसूलों के बाद जो लोग रौशन निशानियाँ देख चुके थे वे आपस में लड़ते	मगर (अल्लाह की मशीयत यह न थी कि वह लोगों को जबरन इखतिलाफ से रोके, इस वजह से) उन्होंने बाहम इखतिलाफ किया	फिर कोई ईमान लाया और किसी ने कुफ़्र की राह इख्तियार की	हाँ, अल्लाह चाहता, तो वे हरगिज़ न लड़ते, मगर अल्लाह जो चाहता है, करता है	
Tafsir	